Job

Chapter 14

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

אָדָם	יְלוּד	אִשָּׁה	קְצַר	יָמִים	וּשְׂבַע־	רֹגֶז׃
मनुष्य	जन्मा	स्त्री-से	छोटे	दिनों-का	और-भरा-हुआ	कष्ट-से
H0120	H3205	H0802	H7116	H3117	H7649	H7267

> अय्यूब ने कहा, “हम सभी मानव है हमारा जीवन छोटा और दु:खमय है!

2

כְּצִיץ	יָצָא	וַיִּמָּל	וַיִּבְרַח	כַּצֵּל	וְלֹא	יַעֲמוֹד׃
फूल-की-तरह	वह-निकलता-है	और-मुरझा-जाता-है	और-भागता-है	छाया-की-तरह	और-नहीं	ठहरता
	H3318		H1272	H6738	H3808	H5975

> मनुष्य का जीवन एक फूल के समान है जो शीघ्र उगता है और फिर समाप्त हो जाता है। मनुष्य का जीवन है जैसे कोई छाया जो थोड़ी देर टिकती है और बनी नहीं रहती।

3

אַף־	עַל־	זֶה	פָּקַחְתָּ	עֵינֶךָ	וְאֹתִי	תָבִיא	בְמִשְׁפָּט	עִמָּךְ׃
कितना-अधिक	पर	इस	तूने-खोली	अपनी-आँखें	और-मुझे	तू-लाता-है	न्याय-में	अपने-साथ
H0637		H2088	H6491		H0853	H0935	H4941	

> हे परमेश्वर, क्या तू मेरे जैसे मनुष्य पर ध्यान देगा क्या तू मेरा न्याय करने मुझे सामने लायेगा

4

מִי־	יִתֵּן	טָהוֹר	מִטָּמֵא	לֹא	אֶחָד׃
कौन	देगा	शुद्ध	अशुद्ध-से	नहीं	एक-भी
H4310	H5414	H2889	H2931	H3808	H0259

> “किसी ऐसी वस्तु से जो स्वयं अस्वच्छ है स्वच्छ वस्तु कौन पा सकता है कोई नहीं।

5

אִם	חֲרוּצִים	יָמָיו	מִסְפַּר־	חֳדָשָׁיו	אִתָּךְ	]חקו[	)חֻקָּיו(	עָשִׂיתָ	וְלֹא	יַעֲבוֹר׃
यदि	निर्धारित	उसके-दिन	गिनती	उसके-महीनों-की	तेरे-पास	—	उसकी-सीमाएँ	तूने-बनाई	और-नहीं	वह-पार-करेगा
	H2782	H3117	H4557	H2320	H0854	H2706	H2706		H3808	

> मनुष्य का जीवन सीमित है। मनुष्य के महीनों की संख्या परमेश्वर ने निश्चित कर दी है। तूने मनुष्य के लिये जो सीमा बांधी है, उसे कोई भी नहीं बदल सकता।

6

שְׁעֵה	מֵעָלָיו	וְיֶחְדָּל	עַד־	יִרְצֶה	כְּשָׂכִיר	יוֹמוֹ׃
दृष्टि-फेर	उससे	और-वह-रुके	जब-तक	वह-प्रसन्न-हो	मज़दूर-की-तरह	अपना-दिन
H8159		H2308	H5704	H7521	H7916	H3117

> सो परमेश्वर, तू हम पर आँख रखना छोड़ दे। हम लोगों को अकेला छोड़ दे। हमें अपने कठिन जीवन का मजा लेने दे, जब तक हमारा समय नहीं समाप्त हो जाता।

7

כִּי	יֵשׁ	לָעֵץ	תִּקְוָה	אִם־	יִכָּרֵת	וְעוֹד	יַחֲלִיף	וְיֹנַקְתּוֹ	לֹא	תֶחְדָּל׃
क्योंकि	है	पेड़-के-लिए	आशा	यदि	वह-काटा-जाए	और-फिर	वह-बदलेगा	और-उसकी-शाखाएँ	नहीं	रुकेगी
	H3426	H6086			H3772	H5750	H2498	H3127	H3808	H2308

> “किन्तु यदि वृक्ष को काट गिराया जाये तो भी आशा उसे रहती है कि वह फिर से पनप सकता है, क्योंकि उसमें नई नई शाखाऐं निकलती रहेंगी।

8	אִם־	יַזְקִין	בָּאָרֶץ	שָׁרְשׁוֹ	וּבֶעָפָר	יָמוּת	גִּזְעוֹ׃
	यदि	बूढ़ी-हो-जाए	भूमि-में	उसकी-जड़	और-धूल-में	मर-जाए	उसका-ठूँठ
		H2204	H0776	H8328	H6083	H4191	H1503

> चाहे उसकी जड़े धरती में पुरानी क्यों न हो जायें और उसका तना चाहे मिट्टी में गल जाये।

9	מֵרֵיחַ	מַיִם	יַפְרִחַ	וְעָשָׂה	קָצִיר	כְּמוֹ־	נָטַע׃
	सुगन्ध-से	पानी-की	वह-फूलेगा	और-करेगा	फसल	जैसे	नया-पौधा
	H7381	H4325				H3644	H5194

> किन्तु जल की गंध मात्र से ही वह नई बढ़त देता है और एक पौधे की तरह उससे शाखाएं फूटती हैं।

10	וְגֶבֶר	יָמוּת	וַיֶּחֱלָשׁ	וַיִּגְוַע	אָדָם	וְאַיּוֹ׃
	और-पुरुष	मरता-है	और-दुर्बल-होता-है	और-प्राण-छोड़ता-है	मनुष्य	और-वह-कहाँ-है
	H1397	H4191	H2522	H1478	H0120	H0346

> किन्तु जब बलशाली मनुष्य मर जाता है उसकी सारी शक्ति खत्म हो जाती है। जब मनुष्य मरता है वह चला जाता है।

11	אָזְלוּ־	מַיִם	מִנִּי־	יָם	וְנָהָר	יֶחֱרַב	וְיָבֵשׁ׃
	चले-गए	पानी	से	समुद्र	और-नदी	सूख-जाती-है	और-सूख-जाती-है
	H0235	H4325		H3220	H5104		H3001

> जैसे सागर के तट से जल शीघ्र लौट कर खो जाता है और जल नदी का उतरता है, और नदी सूख जाती है।

12	וְאִישׁ	שָׁכַב	וְלֹא־	יָקוּם	עַד־	בִּלְתִּי	שָׁמַיִם	לֹא	יָקִיצוּ	וְלֹא־	יֵעֹרוּ	מִשְּׁנָתָם׃
	और-मनुष्य	लेट-जाता-है	और-नहीं	उठता	जब-तक	बिना	आकाश	नहीं	वे-जागेंगे	और-नहीं	वे-जगाएंगे	अपनी-नींद-से
	H0376	H7901	H3808		H5704	H1115	H8064	H3808	H6974	H3808	H5782	H8142

> उसी तरह जब कोई व्यक्ति मर जाता है वह नीचे लेट जाता है और वह महानिद्रा से फिर खड़ा नहीं होता। वैसे ही वह व्यक्ति जो प्राण त्यागता है कभी खड़ा नहीं होता अथवा चिर निद्रा नहीं त्यागता जब तक आकाश विलुप्त नहीं होंगे।

13	מִי	יִתֵּן	בִּשְׁאוֹל	תַּצְפִּנֵנִי	תַּסְתִּירֵנִי	עַד־	שׁוּב	אַפֶּךָ	תָּשִׁית	לִי	חֹק	וְתִזְכְּרֵנִי׃
	कौन	देगा	अधोलोक-में	तू-मुझे-छिपाए	तू-मुझे-छिपाए	जब-तक	लौटना	तेरा-क्रोध	तू-ठहराए	मेरे-लिए	सीमा	और-मुझे-याद-करे
	H4310	H5414	H7585	H6845	H5641	H5704	H7725	H0639	H7896		H2706	H2142

> “काश! तू मुझे मेरी कब्र में मुझे छुपा लेता जब तक तेरा क्रोध न बीत जाता। फिर कोई समय मेरे लिये नियुक्त करके तू मुझे याद करता।

14	אִם־	יָמוּת	גֶּבֶר	הֲיִחְיֶה	כָּל־	יְמֵי	צְבָאִי	אֲיַחֵל	עַד־	בּוֹא	חֲלִיפָתִי׃
	यदि	मरता-है	पुरुष	क्या-वह-फिर-जीएगा	सब	दिनों	अपनी-सेवा-के	मैं-प्रतीक्षा-करूँगा	जब-तक	आए	मेरी-छुट्टी
		H4191	H1397	H2421	H3605	H3117		H3176	H5704	H0935	H2487

> यदि कोई मनुष्य मर जाये तो क्या जीवन कभी पायेगा मैं तब तक बाट जोहूँगा, जब तक मेरा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता और जब तक मैं मुक्त न हो जाऊँ।

15	תִּקְרָא	וְאָנֹכִי	אֶעֱנֶךָּ	לְמַעֲשֵׂה	יָדֶיךָ	תִכְסֹף׃
	तू-पुकारेगा	और-मैं	उत्तर-दूँगा-तुझे	कार्य-के-लिए	अपने-हाथों-के	तू-चाहेगा
	H7121	H0595		H4639	H3027	H3700

> हे परमेश्वर, तू मुझे बुलायेगा और मैं तुझे उत्तर दूँगा। तूने मुझे रचा है, सो तू मुझे चाहेगा।

16								
	כִּֽי־	עַתָּה	צְעָדַי	תִּסְפּ֑וֹר	לֹֽא־	תִשְׁמֹ֗ור	עַל־	חַטָּאתִֽי׃
	क्योंकि	अब	मेरे-कदम	तू-गिनता-है	नहीं	तू-देखता	पर	मेरे-पाप
		H6258	H6806		H3808	H8104		

> फिर तू मेरे हर चरण का जिसे मैं उठाता हूँ, ध्यान रखेगा और फिर तू मेरे उन पापों पर आँख रखेगा, जिसे मैंने किये हैं।

17						
	חָתֻם	בִּצְר֣וֹר	פִּשְׁעִ֑י	וַ֝תִּטְפֹּ֗ל	עַל־	עֲוֹנִֽי׃
	मुहरबंद	थैली-में	मेरा-अपराध	और-तूने-गढ़ा	पर	मेरे-अधर्म
	H2856		H6588	H2950		H5771

> काश! मेरे पाप दूर हो जाएँ। किसी थैले में उन्हें बन्द कर दिया जाये और फिर तू मेरे पापों को ढक दे।

18							
	וְ֭אוּלָם	הַר־	נוֹפֵ֣ל	יִבּ֑וֹל	וְ֝צ֗וּר	יֶעְתַּ֥ק	מִמְּקֹמֽוֹ׃
	परन्तु	पहाड़	गिरता-है	और-टूट-जाता-है	और-चट्टान	हट-जाती-है	अपने-स्थान-से
	H0199	H2022	H5307		H6697	H6275	H4725

> “जैसे पर्वत गिरा करता है और नष्ट हो जाता है और कोई चट्टान अपना स्थान छोड़ देती है।

19										
	אֲבָנִ֨ים	שָׁ֥חֲקוּ	מַ֗יִם	תִּשְׁטֹֽף־	סְפִיחֶ֥יהָ	עֲפַר־	אָ֑רֶץ	וְתִקְוַ֖ת	אֱנ֣וֹשׁ	הֶאֱבַֽדְתָּ׃
	पत्थरों-को	घिसते-हैं	पानी	बहा-ले-जाता-है	उसकी-उपज	धूल	पृथ्वी-की	और-आशा	मनुष्य-की	तूने-नष्ट-की
	H0068	H7833	H4325	H7857		H6083	H0776		H0582	H0006

> जल पत्थरों के ऊपर से बहता है और उन को घिस डालता है तथा धरती की मिट्टी को जल बहाकर ले जाती है। हे परमेश्वर, उसी तरह व्यक्ति की आशा को तू बहा ले जाता है।

20						
	תִּתְקְפֵ֣הוּ	לָ֭נֶצַח	וַיַּהֲלֹ֑ךְ	מְשַׁנֶּ֥ה	פָ֝נָ֗יו	וַֽתְּשַׁלְּחֵֽהוּ׃
	तू-उसे-हराता-है	सदा-के-लिए	और-वह-चला-जाता-है	बदलने-वाला	उसका-चेहरा	और-तू-उसे-भेज-देता-है
	H8630	H5331	H1980		H6440	H7971

> तू एक बार व्यक्ति को हराता है और वह समाप्त हो जाता है। तू मृत्यु के रूप सा उसका मुख बिगाड़ देता है, और सदा सदा के लिये कहीं भेज देता है।

21								
	יִכְבְּד֣וּ	בָ֭נָיו	וְלֹ֣א	יֵדָ֑ע	וְ֝יִצְעֲר֗וּ	וְֽלֹא־	יָבִ֥ין	לָֽמוֹ׃
	सम्मानित-होते-हैं	उसके-पुत्र	और-नहीं	वह-जानता	और-वे-तुच्छ-होते-हैं	और-नहीं	वह-समझता	उनके-लिए
	H3513		H3808	H3045	H6819	H3808	H0995	

> यदि उसके पुत्र कभी सम्मान पाते हैं तो उसे कभी उसका पता नहीं चल पाता। यदि उसके पुत्र कभी अपमान भोगतें हैं, जो वह उसे कभी देख नहीं पाता है।

22								
	אַךְ־	בְּ֭שָׂרוֹ	עָלָ֣יו	יִכְאָ֑ב	וְ֝נַפְשׁ֗וֹ	עָלָ֥יו	תֶּאֱבָֽל׃	פ
	बस	उसका-शरीर	उसके-ऊपर	दर्द-करता-है	और-उसका-प्राण	उसके-ऊपर	शोक-करता-है	—
	H0389	H1320		H3510	H5315		H0056	

> वह मनुष्य अपने शरीर में पीड़ा भोगता है और वह केवल अपने लिये ऊँचे पुकारता है।”